Ep – दक्षिण की रानी न्याय के समय उठेंगी इस पीढ़ी के साथ और
इसकी निंदा करेंगी मत्ती १२:४२-४५ | 1

– Save This Page as a PDF–

दक्षिण की रानी न्याय के समय उठेंगी इस पीढ़ी के साथ और इसकी निंदा करेंगी

मत्ती १२:४२-४५

खोदाई: नीनवे के लोग और दक्षिण की रानी यीशु की पीढ़ी की निंदा कैसे करते हैं? एक व्यक्ति जो सुधर गया है लेकिन ईश्वर की उपस्थिति की उपेक्षा करता है वह और भी बड़ी बुराई का शिकार है। इज़राइल के नेता इस सिद्धांत का उदाहरण कैसे देते हैं? येशु योना से कैसे महान है? सोलोमन से? फरीसियों ने इसकी व्याख्या कैसे की होगी?

चिंतन: मसीहा को हृदय को साफ़ करने और व्यवस्थित करने के अलावा और क्या चाहिए? क्या आपने अपने जीवन में आध्यात्मिक शून्यता को भर दिया है? कैसे? कब? क्या होता है जब हमारे पास अपनी सर्वश्रेष्ठ सोच ही शेष रह जाती है? पवित्र आत्मा की शक्ति से जुड़ने के बाद से आपने अपने जीवन में कौन से दीर्घकालिक परिवर्तन देखे हैं?

पवित्र आत्मा की निंदा करने के लिए मसीह की फटकार और न्याय के शब्दों को सुनने के बाद, कुछ फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने उससे यह कहकर आक्रामकता दोहराने की कोशिश की, “गुरु, हम आपसे एक संकेत देखना चाहते हैं” (मत्ती १२:३८) . उन्होंने प्रभु की कटु निंदा का उत्तर उनसे एक सतही सम्मानजनक प्रश्न पूछकर दिया, जिससे संकेत मिलता है कि वे अपनी जीभ काट रहे थे, मानो उस पर हमला करने का सबसे अच्छा समय आने तक सभ्यता का आभास देने के लिए दृढ़ थे।

यीशु ने स्पष्ट रूप से उन्हें संकेत देने से इनकार कर दिया, लेकिन उन्हें तानाख में दो घटनाओं की ओर निर्देशित किया। पहली घटना भविष्यवक्ता योना का वृत्तांत है जो एक व्हेल द्वारा निगल लिए जाने के बाद मृतकों में से जीवित हो गया था (जोना At– जोना की प्रार्थना पर मेरी टिप्पणी देखें)। दूसरी घटना जिसका उल्लेख यीशु ने यहां किया वह सुलैमान की चिंता है। यीशु योना से और सुलैमान से भी महान था। दक्षिण की रानी ने सुलैमान के बारे में सुना और उसके ज्ञान को सुनने के लिए पृथ्वी के छोर से यात्रा की। और यद्यपि मुख्य चरवाहा स्वर्ग से आया था, परन्तु फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने उसकी बात नहीं मानी।

Ep – दक्षिण की रानी न्याय के समय उठेंगी इस पीढ़ी के साथ और
इसकी निंदा करेंगी मत्ती १२:४२-४५ | 2



प्राचीन शीबा की रानी, जो सबियन्स का देश है, को अक्सर
दक्षिण की रानी कहा जाता था, क्योंकि उसका देश निचले अरब में था, जो इज़राइल के दक्षिण-पूर्व में लगभग १,२०० मील दूर था। सबियन एक अत्यंत समृद्ध लोग थे, जिन्होंने अपनी संपत्ति अत्यधिक उत्पादक कृषि और उनकी भूमि से होकर गुजरने वाले आकर्षक भूमध्य सागर से भारत के व्यापार मार्गों से अर्जित की थी। फिर भी, दक्षिण की धनी और प्रसिद्ध रानी – जो एक गैर-यहूदी, एक महिला, एक मूर्तिपूजक और एक अरब थी
– इसराइल के राजा सुलैमान से मिलने, उससे ईश्वर की बुद्धि के बारे में जानने और भुगतान करने के लिए आई थी। उसका सम्मान करें (प्रथम राजा १०:१-१३)।

प्राचीन फ़िलिस्तीन के लोगों को दक्षिण की भूमि पृथ्वी के छोर पर लगती थी। योएल इसे एक सुदूर देश होने की बात करता है (जोएल ३:८बी), और यिर्मयाह ने इसे एक दूर देश के रूप में संदर्भित किया है (यिर्मयाह ६:२०ए)। फिर भी, रानी और उसके बड़े दल ने परमेश्वर के एक आदमी सुलैमान के ज्ञान को सुनने के लिए अरब रेगिस्तान में लंबी और कठिन यात्रा की। वह राजा के लिए खजाने पर खजाना लेकर आई, जो पहले से ही विश्वास से परे धनवान था, उसके पास मौजूद ईश्वरीय ज्ञान के लिए सम्मान और कृतज्ञता के एक बयान के रूप में।

फिर, योना के चिन्ह की तरह (देखें Eo – भविष्य वक्ता योना का चिन्ह), येशुआ ने उन विद्रोही यहूदियों से तुलना की जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था। यह ऐसा है मानो वह कह रहा हो, “वह बुतपरस्त महिला सुलैमान के लिए बहुत सारा खजाना लेकर आई और उससे सीखने के लिए उसके चरणों में बैठ गई। परन्तु अब जब मैं, जो सुलैमान से भी बड़ा है, तुम्हारे पास न केवल ज्ञान का उपदेश देने आया, परन्तु पाप से मुक्ति और अनन्त जीवन का मार्ग भी सुनाने लगा, तो तुम ने सुनने से इन्कार कर दिया। नतीजतन, यह गैर-यहूदी महिला इस आत्म-धर्मी पीढ़ी के साथ न्याय के समय उठेगी (प्रकाशित वाक्य Fo – महान श्वेत सिंहासन निर्णय पर मेरी टिप्पणी देखें) और इसकी निंदा करेगी” (मत्ती १२:४२)। उस बुतपरस्त रानी के पास मार्गदर्शन के लिए टोरा नहीं था, न ही उसके पास वास्तव में निमंत्रण भी था, लेकिन वह सुलैमान से यहोवा की सच्चाई सीखने के लिए अपनी स्वतंत्र इच्छा से आई थी। उस पीढ़ी ने परमेश्वर के अपने पुत्र को अस्वीकार कर दिया; इस प्रकार, एक दिन गैर-यहूदी नीनवेइयों और सबियों के

Ep – दक्षिण की रानी न्याय के समय उठेंगी इस पीढ़ी के साथ और
इसकी निंदा करेंगी मत्ती १२:४२-४५ | 3

विश्वास द्वारा भी उनकी निंदा की जाएगी।

यह दिखाने के लिए कि यदि वे अविश्वास में बने रहे तो पृथ्वी पर उनकी स्थिति क्या होगी, पापियों के उद्धारकर्ता ने उनकी तुलना एक ऐसे व्यक्ति से की जिसने राक्षस से मुक्ति पाई थी। जब कोई दुष्ट आत्मा किसी मनुष्य में से निकल जाती है, तो वह विश्राम की खोज में शुष्क स्थानों में फिरती है, और उसे नहीं पाती (मत्ती १२:४३)। प्रसव के बाद, उसने अपने जीवन को साफ़ करने और चीज़ों को व्यवस्थित करने के लिए हर कल्पनीय प्राकृतिक उपाय आज़माए। लेकिन केवल “धर्म” कभी भी पर्याप्त नहीं होता क्योंकि उसके पास रुआच हाकोडेश की अलौकिक शक्ति का अभाव था। लेकिन वह सोचता है कि जब राक्षस उसे छोड़ देगा तो वह साफ़ हो जाएगा। फिर क्या होता है?

तब दुष्टात्मा कहती है, “मैं उसी घर में लौट आऊँगी जिसे मैं छोड़ आई थी।” चूँकि वहाँ आध्यात्मिक शून्यता है, शैतान उसे भरता है। जब दानव आता है, तो उसे पता चलता है कि घर में किसी अन्य बुरी आत्मा का कब्जा नहीं है। तथ्य यह है कि घर को साफ़ कर दिया गया था और व्यवस्थित कर दिया गया था, यह बताता है कि उसने वास्तव में अपने आध्यात्मिक जीवन को पटरी पर लाने की कोशिश की थी। अपने स्वयं के प्रयासों के बल पर वह अस्थायी रूप से उस राक्षस से मुक्त हो गया, लेकिन उसने उस आध्यात्मिक शून्य को यीशु मसीह से नहीं भरा (मत्ती १२:४४)। मित्र, आपके जीवन में पवित्र आत्मा की शक्ति के बिना, आप किसी भी स्थायी परिवर्तन को प्रभावित करने में आध्यात्मिक रूप से असमर्थ हैं। यदि आपके घर में कोई ऐसा लैंप है जिसका प्लग नहीं लगा है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप लैंप के साथ क्या करते हैं – रोशनी नहीं आएगी। और यह तब तक चालू नहीं होगा जब तक आप इसे इसके पावर स्रोत में नहीं डालते। ख़ैर, रुआच हमारी शक्ति का स्रोत है और उसके बिना हम अपनी सर्वश्रेष्ठ सोच पर ही निर्भर रह जाते हैं, जो हमेशा कमज़ोर पड़ती है।

तब दुष्टात्मा जाकर अपने से भी अधिक दुष्ट सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे भीतर जाकर रहने लगती हैं। और उस व्यक्ति की अंतिम स्थिति पहले से भी बदतर है (मत्ती १२:४५ए)। इस दुष्ट पीढ़ी के साथ ऐसा ही होगा (मत्ती १२:४५बी)। इस कहानी का सार यह है कि उस दुष्ट पीढ़ी के साथ ऐसा ही होगा। उनका प्रकाश उन्हें मसीहा के लिए तैयार करने के लिए जॉन द बैपटिस्ट के उपदेश से शुरू हुआ। इस प्रकार राष्ट्र को स्वच्छ और सुव्यवस्थित किया गया। लेकिन उनका अंत पहले से भी बदतर होगा। उन्हें रोम को श्रद्धांजलि देनी पड़ी, लेकिन कम से कम रोम ने उन्हें अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाए रखने की अनुमति दी। यरूशलेम खड़ा था, मंदिर कार्य कर रहा था और उनके पास महासभा के साथ एक अर्ध-स्वायत्त सरकार थी। लेकिन ७० ईस्वी तक उनके पास कोई राष्ट्र नहीं था, कोई मंदिर नहीं था, लगभग दस लाख लोगों को सूली पर चढ़ा दिया गया था और वे दुनिया भर के देशों में बिखर गए थे। अंतिम परिणाम यह हुआ कि उनकी स्थिति पहले से भी बदतर हो गयी।

१९१५ में पादरी विलियम बार्टन ने लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित करना शुरू

Ep – दक्षिण की रानी न्याय के समय उठेंगी इस पीढ़ी के साथ और
इसकी निंदा करेंगी मत्ती १२:४२-४५ | 4

किया। एक प्राचीन कथाकार की पुरातन भाषा का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपने दृष्टान्तों को सफेड द सेज के उपनाम से लिखा। और अगले पंद्रह वर्षों तक उन्होंने सफ़ेद और उसकी स्थायी पत्नी केतुराह के ज्ञान को साझा किया। यह एक ऐसी शैली थी जिसका उन्होंने आनंद लिया। कहा जाता है कि १९२० के दशक की शुरुआत तक सफ़ेद के अनुयायियों की संख्या कम से कम तीन मिलियन थी। एक सामान्य घटना को आध्यात्मिक सत्य के चित्रण में बदलना हमेशा बार्टन के मंत्रालय का मुख्य विषय रहा है।

अब सप्ताह का पहला दिन था, और मैं उठा, नहाया, और स्वच्छ वस्त्र पहिनाया, और परमेश्वर के भवन में गया। और ऐसा हुआ कि मैंने मध्य दराज में खोजा और मुझे उसमें एक साफ़ शर्ट मिली जो लाँड्री से घर भेजी गई थी। और उसकी छाती चमके हुए अलबास्टर के समान चमक उठी; और उसमें मौजूद स्टार्च इतना कठोर था कि कोई भी बटनहोल को स्क्रूड्राइवर से शायद ही खोल सके।

और इससे पहले कि मैं इसे पहन पाता, मैंने लॉन्ड्री में लगाए गए विभिन्न पिनों को बाहर निकाला, और शर्ट में कई पिन थे।

जब मैंने सौर मंडल को अपनी जगह पर रखने के लिए पर्याप्त पिन निकाल ली, तो मैंने शर्ट पहन ली।

लेकिन मैंने वन पिन को नजरअंदाज कर दिया था।

और मैं चर्च गया, और बैठ गया; और मैंने पाया कि परिधान में एक पिन रह गई थी जिससे मैंने इतने सारे पिन निकाले थे।

और मैंने अपनी स्थिति बदल दी ताकि पिन अब मुझे चोट न पहुँचाए, और मैं किसी कारण से इसके बारे में भूल गया। लेकिन जब हम गाने में प्रभु की स्तुति करने के लिए उठे, और फिर से बैठे, तो देखा कि पिन ने मुझे फिर से चोट पहुंचाई, और मेरे शरीर के दूसरे हिस्से में भी।

और बाद में मैंने इसे अभी भी कहीं और पाया।

और जब मैं अपने घर लौटा, तब मैं ने अपने वस्त्र उतारे, और पिन ढूंढ़ा, और वह मिल गई, और उसे उतार दिया; और इससे मुझे अब कोई कष्ट नहीं हुआ।

और मैं ने अपने मन से कहा, जो दोष तू ने दूर किए हैं उन से अधिक शान्ति न लेना; न तो तू आत्मतुष्ट हो। देखो, जब एक पिन शर्ट में रह गई, तो क्या इससे तुम्हें बीस स्थानों पर चोट नहीं लगी? ऐसा ही एक दोष है, जिसे तू दूर नहीं करता। इसलिये जब तक कोई सिद्ध न हो जाए, तब तक कोई घमण्ड न पालें; और यदि समय आए जब वे स्वयं को पूर्ण मानें, लो यह विश्वास ही शेष पिन है। हाँ, और यह आत्म-धार्मिकता की टोपी की तरह लंबा है; और देखिये, बचे हुए पिनों को हटाना न भूलें।